October 2023

Monthly Magazine
Year 9 Issue 10

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार

In Giving We Believe

सत्युग

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

बुधवार सतसंग

प्रत्येक बुधवार प्रात ११ बजे से ११.३० बजे तक

फेसबुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसबुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

|| नारायण नारायण ||

NRSP दीपावली स्नेह सम्मेलन

नारायण के आशीर्वाद से एनआरएसपी का प्रथम दीपावाली स्नेह सम्मेलन नारायण भवन में आयोजित किया जा रहा है। आप इस स्नेह सम्मेलन में सादर आमंत्रित हैं।

दिन 13 नवंबर 2023

समय शाम 5 बजे से 7 बजे तक

स्थान नारायण भवन टोपीवाला कम्पाउंड स्टेशन रोड़ गोरेगांव वेस्ट मुंबई

आप भी आएँ और अपने मित्रों और परिजनों को भी साथ लाएँ।

।। ॐ ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।।नारायण नारायण।।

नवरात्रि या नव दुर्गा यानी शक्ति पूजन का त्यौहार।

पूजन उस शक्ति का, आभार उस शक्ति का जिसने इस ब्रह्माण्ड को रचा और जिसकी कृपा की वजह से यह ब्रह्माण्ड, यह समस्त सृष्टि, यह पूरी दुनिया टिकी हुई है।

हम महिलाओं को उस परम शक्ति का अंश माना जाता है। जन्मदात्री शक्ति के अंश के रूप में इस धरा पर हमारी ज़िम्मेदारी बहुत अधिक बढ़ जाती है।

सबको संभालने की ज़िम्मेदारी, सबको संस्कार देने की ज़िम्मेदारी, सबको प्यार, आदर, सम्मान देने की ज़िम्मेदारी, क्योंकि हमारी संतति हमारा ही अनुसरण करती है तो हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह हो जाती है कि हमारा चरित्र मज़बूत हो। हर परिस्थिति में हम दृढ़ता के साथ, मज़बूती के साथ डटे रहें। हर रिश्ते को प्यार और परवाह के घनिष्ठ धागों में बांधे रखें। हर एक को अपना सर्वोत्तम दें। विचार, वाणी, व्यवहार की सतत साधना करें क्योंकि हम केवल अपने जीवन के निर्माता नहीं हैं बल्कि हमारे पूरे परिवार का सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, हमारे ऊपर निर्भर है इसलिए यह बहुत अधिक आवश्यक है कि हम शब्दों के महत्व को समझें और सही उचित, सकारात्मक शब्दों का ही प्रयोग करें।

जब हम ऐसा करेंगे तभी हम अपने आप में शक्ति स्वरूपा के अंश को सही मायने प्रदान कर पाएँगे।

तभी हम नव दुर्गा त्यौहार को सही अर्थों में मनाने के हक़दार होंगे।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-
संध्या गुप्ता
09820122502
-: प्रधान कार्यालय :-
नारायण भवन
टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़
गोरेगांव वेस्ट, मुंबई

-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगीं अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाड़िया	9839582411
बिहार	पूनम दूधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनू गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली (नोएडा)	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली (नोएडा)	मेघा गुप्ता	9968696600
दिल्ली (डब्ल्यू)	रेनु विज	9899277422
धूलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	राधिका अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मालेगांव	आरती दी	9518995867
मोरबी	कल्पना चोरौड़िया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चंदा काबरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंग्रोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सूरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सांगली	हेमा मंत्री	9403571677
सिकर (राजस्थान)	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबर्ली	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झँवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम

ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैंकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

संपादकीय

प्रिय सतसंगियों,

।। नारायण नारायण ।।

नवरात्रि की स्थापना, शक्ति की उपासना का समय।

शक्ति जो इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड को चला रही है, शक्ति जिसने इस संपूर्ण ब्रह्माण्ड को थाम रखा है। शक्ति, जिसने सृष्टि के कण-कण को जन्म तो दिया ही है साथ ही साथ उसकी उन्नति, प्रगति, सफलता भी इस शक्ति की वजह से ही है।

शास्त्रों ने इस शक्ति के प्रति आभार दिखाने के लिए शक्ति पूजा के रूप में नवरात्रि पर्व का विधान किया है जो अनादि काल से प्रचलित है और हम हिंदू बड़े ही श्रद्धाभाव से इस त्यौहार को मनाते हैं।

टीम सतयुग ने इस बार के इस अंक में शक्ति के सही मायने जानने और समझने का प्रयत्न किया है।

आप भी पढ़ें, समझें और जीवन में उतारें।

शेष कुशल

आपकी अपनी

संध्या गुप्ता

अंतरर्राष्ट्रीय कार्यालय :		
नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये।आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं। आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है। अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net
narayanreikisatsangparivar
@narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

सतयुग का शंखनाद

नवरात्रि का त्यौहार उस आद्या शक्ति के उत्सव का त्यौहार है जिसने इस संपूर्ण सृष्टि की रचना की । जिससे विकास संभव हुआ । वह शक्ति जिसने इस संपूर्ण ब्रह्मांड को थाम रखा है और इस शक्ति को हम जननी के रूप में, माँ के रूप में, नारी के रूप में पहचानते हैं ।

नवरात्रि पर्व सही अर्थ में स्त्रीत्व का आनंदोत्सव है ।

ये नौ दिन पूरी तरह से दुर्गा और उनके आठ अवतारों के पूजन, स्त्रीत्व के उत्कर्ष का स्वरूप, माँ के नौ अवतार के माध्यम से पूर्णतः परिलक्षित होता है जो कि निम्न हैं ।

प्रथम शक्ति, शैलपुत्री त्रिदेव शक्ति और सृष्टि की सृजनकर्ता हैं ।

द्वितीय शक्ति, माँ ब्रह्मचारिणी आध्यात्मिकता, ध्यान, शांति, समृद्धि और खुशी की प्रतीक हैं । घर की माता, पूजा अर्चना द्वारा घर को आध्यात्मिकता से भरतीं हैं । उसकी पूजा अर्चना का एक ही लक्ष्य होता है, अपने परिवार की सुख,शांति,सेहत और सफलता। उसकी एक एक साँस अपने परिवार के लिए शुभेच्छा से भरी होती है।

तृतीय शक्ति, माँ चंद्रघंटा अधर्म-नाशक और धर्म-शासिका का प्रतिबिंब हैं।

चतुर्थ शक्ति, कुष्मांडा माँ सृष्टि का आरंभ और तमसहर्ता हैं।

पंचम शक्ति, स्कंदमाता माँ ज्ञान, शक्ति, अग्नि, ऊर्जा, जीवन और समृद्धि का पर्याय हैं।

छठी शक्ति मां कात्यायनी योद्धा देवी महिषासुरमर्दिनी हैं।

सप्तम शक्ति, मां कालरात्रि बुराई का नाश करने वाली देवी दुर्गा का हिंसक रूप हैं।

अष्टम शक्ति, मां महागौरी पवित्रता, ऊर्जा और प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करती हैं।

नवम शक्ति, सिद्धिदात्री मां सर्वव्यापक हैं, ज्ञान हैं।

मातृशक्ति की आराधना के लिए हमें वर्ष में ९ दिन विशेष दिए गए हैं । यह नारी शक्ति के आदर और सम्मान का उत्सव है । यह उत्सव नारी को अपने स्वाभिमान व अपनी शक्ति का स्मरण दिलाता है, साथ ही समाज के अन्य पुरोधाओं को भी नारी शक्ति का सम्मान करने के लिए प्रेरित करता है । माँ होना नारी के सबसे बड़े गुण को परिलक्षित करता है । शक्ति का सबसे बड़ा गुण जो उसे भगवान ने प्रदान किया है वह है मातृत्व। एक मां अपने बच्चे के लालन-पालन और उसके अस्तित्व निर्माण में अपने पूरे जीवन की आहुति देती है। मातृत्व से ही वह अपनी संतानों में संस्कारों का बीजारोपण करती है। यह मातृत्व भाव ही व्यक्ति के अंदर पहुंचाकर दया, करुणा, प्रेम आदि गुणों को जन्म देती है।

एक नारी में जितनी इच्छाशक्ति दृढ़ता के साथ होती है, वह पुरुष में शायद ही होती है। आज नारी जाति अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के कारण ही घर और बाहर, ऑफिस हो या सामाजिक कार्यक्षेत्र, हर जगह स्वयं को स्थापित कर रही है।

दोहरी भूमिका लिए वह दोनों ही स्थितियों का बेहतर निर्वाह करती है । कन्या का विवाह के पश्चात अहंकार भाव खत्म हो जाता है । पति के नाम से वह जानी जाती है। पति के कार्यों को व पति के परिवार का ध्यान, पति के परिवार में यथोचित सम्मान देना, अपनी भावनाओं को एक तरफ रखकर त्याग, समर्पण से कार्य करना उसका उद्देश्य होता है । स्त्री का जीवन परिवार के लिए एक तपस्या, एक तप है, जो निष्काम भाव से किया जाता है ।

प्रत्येक घर में संघर्षों व अग्नि में तपने वाले को शीतलता प्रदान करने वाली नारी होती है। वह अपने ज्ञान, संघर्ष और कर्म से परिवार के सदस्यों को कार्यों के लिए प्रेरित करती रहती है । विवाह का अवसर हो या घर में कोई कष्ट में हो, स्त्री जितनी भावुकता से उस समय को पहचानती है, उतना पुरुष नहीं समझ पाता।

नारी के आभामंडल से घर पवित्र होता है । आप जब बाहर से थककर आते हैं तो बेटी, पत्नी या मां एक गिलास पानी लेकर आपके सामने खड़ी होती है और आपसे पूछती है- 'आज ज्यादा थक गए हो क्या?' इस एक प्रेमभरी दृष्टि से सारी थकान उतर जाती है । नारी की ऊर्जा से ही संपूर्ण परिवार ऊर्जावान होता है । भाई, बहन के प्यार में ऊर्जा, पति-पत्नी के प्रेम में ऊर्जा तथा एक पुत्र अपनी मां के व्यवहार में ऊर्जा प्राप्त कर जीवन जीने का संकल्प करता है । घर की चाहरदीवारी में प्रकाश की तरंगें उसके कारण व्याप्त होती हैं । जिस घर में नारी नहीं होती वह घर निस्तेज प्रतीत होता है ।

घर की प्रत्येक वस्तु को यथावत रखने का कार्य नारी ही करती है । चाहे वह भोजन सामग्री से संबंधित हो, चाहे वह घर-आंगन में सजी रंगोली से लेकर घर की दीवारों की कलात्मक वस्तुओं का रखरखाव । साथ ही घर-आंगन से लेकर स्वच्छता, पवित्रता तथा वाणी में मधुरता सब नारी के गुण हैं जिससे संपूर्ण घर का वातावरण मधुर बनता है, खासकर बेटियों से लेकर घर की मर्यादा, मधुरता, प्रेम और बढ़ता है ।

घर में बेटियां जितना अधिक माता-पिता के मनोभावों को समझती हैं, जितना अधिक वे पिता के कार्यों में सहयोग करती हैं, उतना पुत्र नहीं करता। बेटियां विवाह के बाद अपने पति के यहां जाती हैं तब भी उन्हें अधिक चिंता अपने माता-पिता की लगी रहती है । पुत्री के रूप में स्नेह-प्रेम प्रदान करके माता-पिता के हृदय में वे करुणा भाव को ही जागृत करती हैं ।

भारतीय नारी पुरातन काल में ऋषियां हुआ करती थीं। ऐसी अनेक नारियां हैं जिनके ज्ञान- तपस्या से तीनों लोक प्रभावित होते थे । ऋषि पत्नियां भी ऋषियों के साथ-साथ तप में लीन रहती थीं । वह सतयुग था उसके पश्चात कलयुग में भी नारी शक्तियों ने संस्कृति की रक्षा के लिए अपनी वीरता दिखाई ।

अनेक वीरांगनाएं इस देश की माटी पर जन्मी हैं। उनकी प्रेरणा और संकल्पों से परिवार और समाज को समय-समय पर ऊर्जा प्राप्त हुई है । आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी स्तरों पर नारी शक्ति द्वारा आज भी शंखनाद किया जा रहा है । बड़े-बड़े पदों पर नारियां अपनी विद्वता से देश को दिशा दे रही हैं।

यदि नवदुर्गा के शक्ति और गुणों का अवलोकन करेंगे तो पाएंगे कि सनातन संस्कृति में स्त्री न सिर्फ प्रकृति का अंग है, बल्कि शक्ति का एकमात्र स्रोत भी है । नवरात्रि इसी नारी शक्ति-स्रोत का पूजन है । शक्ति जिससे सृष्टि का आरंभ हुआ । शक्ति जो सृष्टि के पालन और अंत के लिए उत्तरदायी है । शक्ति जो संतुलन स्थापित कर अस्तित्व को आधार ही नहीं देती बल्कि अपने अलग-अलग अवतारों से मानवजाति के जीवन का मार्ग भी प्रशस्त करती है । किसी भी धर्म और पौराणिक कथाओं में स्त्री ईश्वर के स्तर तक नहीं पहुंची । हिन्दुत्व ने स्त्री स्वरूप को ईश्वर से भी ऊपर स्थापित किया है और समस्त गुणों, कार्यों, ज्ञान, संतुलन, अध्यात्म, धर्म और साहस का केंद्र बताया है । जो कुछ भी अच्छा है, वो स्त्री से सृजित या निर्मित होता है, ये पर्व इसी की परिकल्पना है।

हम नारियों के लिए नवरात्रि विशेष संदेश देती है । नवदुर्गा का त्यौहार हमें सिखाता है कि हम अपने अंदर

॥ 卐 ॥

समाहित उन शक्तियों को जागृत करें और जो मानव जीवन हमें प्राप्त हुआ है, उसको सार्थकता की ओर ले जाएं, साथ ही साथ हमसे जुड़े सभी प्रियजनों को भी सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा दें और स्वस्थ समाज बनाने में अपना योगदान दें।

अपनी आंतरिक शक्ति को जगाएं : देवी दुर्गा शक्ति का प्रतीक हैं। वह हमें खुद पर विश्वास रखना और अपनी आंतरिक शक्ति पर विश्वास करना सिखाती हैं।

धर्म के मार्ग पर चलें : मां दुर्गा हमें हमेशा सही के लिए खड़े रहना सिखाती हैं, भले ही इसके लिए आपको अपने प्रियजनों के खिलाफ़ जाना पड़े।

सीखते रहें : मां दुर्गा हमें अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना सिखाती हैं। कुछ भी नया सीखने से न हिचकिचाएं, नई स्किल्स को निखारकर खुद को अपडेट करते रहें।

सकारात्मक रहें : देवी मां हमें जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण रखना सिखाती हैं। एक सकारात्मक और आशावादी दृष्टिकोण आपके जीवन में बाधाओं को दूर करेगा और सफलता लाएगा।

प्यार फैलाएं : शक्ति हमें अंदर से एक खूबसूरत इंसान बनने और हर जगह प्यार फैलाने के लिए प्रेरित करती हैं। यह नफरत, ईर्ष्या और क्रोध जैसी सभी नकारात्मक भावनाओं पर काबू पा लेता है।

आत्म नियंत्रण का अभ्यास करें : नवरात्रि के दौरान उपवास सिर्फ आध्यात्मिकता के लिए नहीं है। यह हमें आत्म-अनुशासित भी बनाता है। यह हमें जीवन में कठिनाइयों पर विजय पाना सिखाता है।

निःस्वार्थ भाव से जिएं : देवी दुर्गा आपको बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना उन लोगों को अपनी सेवा देने के लिए प्रेरित करती हैं जिन्हें इसकी आवश्यकता है।

आस्था और विश्वास रखें : चाहे कुछ भी हो, अपने विश्वास को कायम रखें। जिंदगी आपको एक कर्वबॉल फेंक सकती है। उस समय विश्वास रखें, और यह आपको आगे बढ़ने की ताकत देगा। यह आपको दुःखद समय से लेकर सुखद समय तक ले जाएगा।

शांतिपूर्ण रहें : देवी दुर्गा हमें हिंसा पर शांति का चयन करना सिखाती हैं। शांति के मार्ग पर चलने से नकारात्मकता दूर होगी। सुनिश्चित करें कि आपके कार्य अहिंसा को प्रोत्साहित करते हैं और लोगों की भलाई को बढ़ावा देते हैं। सुखी और संतुलित जीवन जीने के लिए यह सबक हमेशा याद रखें।

नवरात्रि पर्व नारी शक्ति के सम्मान का पर्व है। शक्ति ही हमें मुक्ति, भक्ति दोनों प्रदान करती है। हम उपासना के साथ नारियों के सम्मान का संकल्प लें।

जिस तरह हम नवरात्रि में मातृशक्ति के अनेक स्वरूपों का पूजन करते हैं, उनका स्मरण करते हैं, उसी प्रकार नारी के गुणों का हम सम्मान करें। हमारे घर में रहने वाली माता, पत्नी, बेटी, बहन-इन सब में हम गुण ढूंढें।

नारायण के आशीर्वाद से अयोध्या मालपनी स्वस्थ और सप्त सितारा जीवन जी रही हैं।

ज्ञान मँजूषा

इस बार के ज्ञान मंजूषा के इस स्तंभ में हम दीदी के मन की बात उनकी पसंदीदा किरदार राधिका और कल्याणी के माध्यम से कर रहे हैं।

राधिका लिखती हैं कि एक दिन की बात है, मैं ध्यान साधना में बैठी हुई थी। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे मेरे गुरु ने मुझसे कहा हो कि 'राधिका तुम्हें क्या चाहिए बोलो', और उस पर काम करो फिर तुम देखोगी कि यह प्रकृति, यह ब्रह्मांड, यह पूरी कायनात ही तुम्हारी सहायता के लिए आ गई है, तुम्हारे सपने पूरे करने के लिए। आगे लिखती हैं राधिका कि एकाएक मुझे याद आया कि कुछ समय पहले ही मैंने अपने गुरु के सानिध्य में एक कोर्स किया था और कोर्स में हमारे गुरु ने बहुत सीधी, सरल भाषा में बहुत गहरी बात हमें समझाई थी, हमसे कहा था कि कल्पना करो कि यह तुम्हारा मन है, इसे हमें आठ भागों में बांटना है। जो एक भाग है, यह हमारा चेतन मन है, यानी हमारा कॉन्शियस माइंड है और जो बचे सात हिस्से हैं, यह हमारा अवचेतन मन है यानी सब– कॉन्शियस माइंड है।

'हमारे चेतन मन से कहीं अधिक शक्तिशाली हमारा अवचेतन मन है।'

हमारे गुरु ने हमें बताया कि जब सब–कॉन्शियस माइंड का बिलीफ सिस्टम मजबूत होता है तब जो भी हम अपने जीवन में पाना चाहते हैं, उसे हासिल करना बेहद आसान हो जाता है। राधिका आगे कहती हैं कि हमारे गुरु ने बताया

'जो भी हम वादा करते हैं, जो भी हम कमिटमेंट करते हैं, हमें उसे पूरा करना होगा।'

फॉर एग्जाम्पल : आपने सोचा कि कल से रोज़ सुबह मैं ५:०० बजे उठूंगी। आप को रोज़ ५:०० बजे उठना पड़ेगा और नियमित उठना होगा । धीरे–धीरे इस अवचेतन मन को आपके शब्दों पर विश्वास होने लगेगा और यह मज़बूत होता चला जाएगा और फिर धीरे–धीरे, जैसे–जैसे इससे आप वादे करते चले जाएंगे, छोटे या बड़े और वैसे-वैसे आप वादे पूरे भी करते चले जाएंगे। आप जीवन में जो पाना चाहते हैं, उसे भी पाना आपके लिए बेहद आसान बन जाएगा।

राधिका लिखती हैं कि मैंने इसे आज़माने की सोची, इसे आत्मसात करने की सोची क्योंकि मैं निराशा के गर्त से बाहर निकलना चाहती थी । मेरा आत्मविश्वास मैं खो चुकी थी, उसे मैं वापस लाना चाहती थी। शुरू–शुरू में मैंने छोटे–छोटे प्रयोग करने शुरू किये । मैंने डिसाइड किया कि कल से मैं ४:०० बजे उठूंगी और मैंने उठना शुरू कर दिया।आधा घंटा मेडिटेशन करूँगी, एक घंटा एक्सरसाइज करूँगी, एक घंटा अच्छी किताबें पढ़ूंगी और यह सब मैंने शुरू कर दिया।

धीरे–धीरे मैंने महसूस किया कि मैं भीतर से मज़बूत होती जा रही हूँ। जब मुझे महसूस होने लगा कि मैं भीतर से मज़बूत होती जा रही हूँ, मैंने बड़ी–बड़ी चुनौतियां स्वीकार करनी शुरू कर दीं और मुझे भीतर से जीत का आभास होने लगा। अब जो ढ़ाई साल पहले मेरे सामने बहुत बड़ी चुनौती थी, वह चुनौती अब मुझे छोटी नज़र आने लगी। मैंने उस पर काम करना शुरू किया और मैंने देखा कि वो रिश्ता मेरे करीब आता जा रहा है और आज यह अवस्था है कि हमारे बीच उस रिश्ते के साथ मेरे आपसी संबंध बेहद मज़बूत हो गए हैं और दिन प्रतिदिन मज़बूत होते जा रहे हैं।

आगे लिखती हैं राधिका, मैं वादे करती जाती, उन्हें पूरा करती जाती और भीतर से मज़बूत होती चली गई। मुझे मेरे काम के लिए बड़े–बड़े अवाड्र्स मिल रहे थे। मैं ऐसे लोगों को हील करती जा रही थी जिनके बारे में कहा जाता था कि इनका स्वस्थ होना असम्भव है। मैं दिन प्रतिदिन नई–नई ऊंचाइयों पर पहुँच रही थी, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

आगे लिखती हैं राधिका, लेकिन एक डर अभी भी मेरे भीतर था, जो बचपन से था कि मुझे कार ड्राइव करने में बहुत डर लगता था। मैं बड़ी हुई, मैंने कार चलाना सीखा। लेकिन फिजियोथेरेपिस्ट होने की वजह से कई एक्सीडेंट केस मेरे सामने आते हैं और मैं बेहद डर जाती हूं। परंतु मेरा मन था कि मैं कार ड्राइव करूँ। एक दिन ध्यान साधना के दौरान वापस मेरे गुरु ने मुझे महसूस कराया कि 'राधिका तुम्हें क्या चाहिए बोलो', उस पर काम करो और फिर देखो यह पूरी कायनात ही तुम्हारी सहायता करने आ गई है?, तुम्हारे सपने पूरे करने के लिए। मैंने हिम्मत की और कार ड्राइव करना शुरू कर दिया। आज मेरी स्वयं की बीएमडब्ल्यू है जिसे मैं खुद ड्राइव करती हूँ।

आगे लिखती हैं राधिका कि कई बार मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि मैंने गुरु की एक बात मानी, इस पर काम किया और मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गई। अब तो मैंने ठान लिया है कि मुझे वादे भी सोच समझ कर करने होंगे, जिन्हें मैं पूरा कर सकती हूँ वही कमिटमेंट मुझे करना है क्योंकि मुझे इससे मज़बूती मिलेगी। मैंने तो ठान लिया, आपका क्या इरादा है?

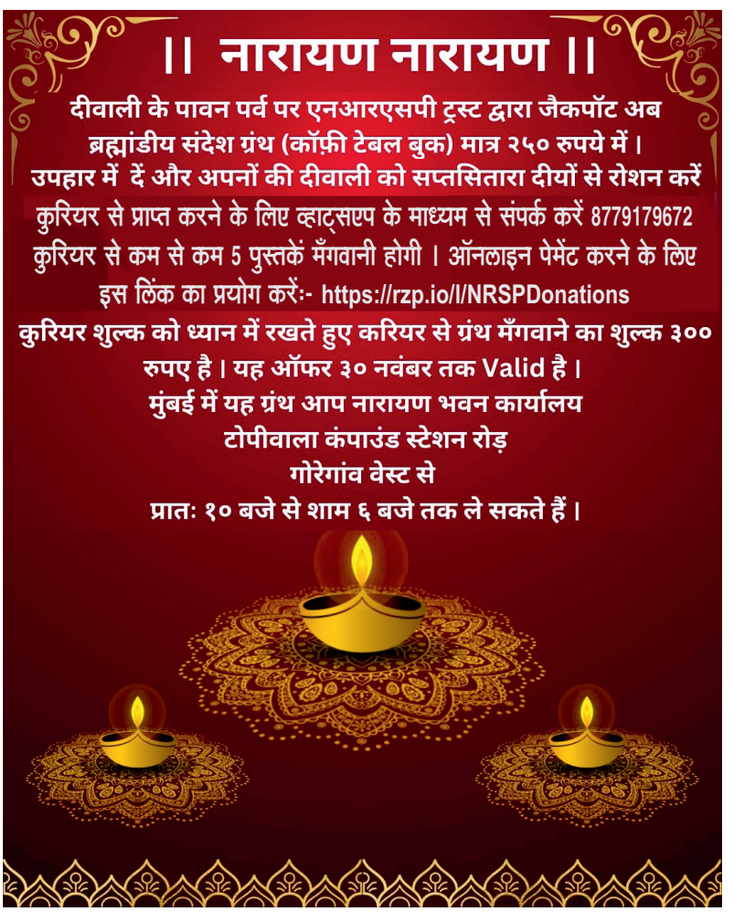

युवा मंच

नवरात्रि नारी शक्ति को समर्पित अवधिकाल है। नारी से ही मानव सृष्टि संभव है, नारी ही पालनहार है। नारी के विभिन्न रूपों की पूजा अर्चना होती है। इसका मुख्य तात्पर्य है, नारी को उसकी सुप्त शक्तियों से परिचित कराना।हमारी युवा पीढ़ी को यह समझना आवश्यक है कि नारी पूजनीय है।

हर स्त्री को अपने अंदर वो गुण आत्मसात् करने होंगे जिससे वो पूजनीय की श्रेणी में रहे। हर पुरुष को नारी के द्वारा दिए जा रहे अमूल्य योगदान को महत्व दे उसकी पूजा करनी होगी अर्थात् उसे आदर देना होगा।

हमारे युवा जिसमें पुरुष व स्त्री वर्ग दोनों सम्मिलित हैं , को इस ईक्वेशन को समझना होगा और प्रयत्न करने होंगे जिससे नारी देवी स्वरूप व्यवहार करे व पुरुष उनके योगदान को समझें।

एक स्त्री को आदर्श बेटी, बहन, बहू, माँ व सास की भूमिका को सर्वोत्तम तरीक़े से निभाना होगा व समाज व कार्यक्षेत्र में कदम से कदम मिला कर चलना होगा। आज के परिवेश में नारी हर क्षेत्र में, हर स्तर पर अपनी छाप छोड़ रही है। नारी घर के साथ साथ बाहर की ज़िम्मेदारियों को बखूबी निभा रही है। नारी में निहित शक्ति का सदुपयोग कर आज वह पूजनीय हो गई है पर साथ ही नारी को यह भी समझना होगा की आज के युग में मिले विशेष अधिकारों का वह फ़ायदा न उठाए, अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहे व एक स्वस्थ समाज का निर्माण करे।

आजकल कई बार देखने मिलता है कि स्त्रियाँ क़ानून का ग़लत फ़ायदा उठा ससुराल वालों पर झूठे आक्षेप लगाती हैं, कभी अपनी ज़िम्मेदारियों से विमुख हो अभद्र व्यवहार करती हैं। आप सभी युवतियों से पुनः निवेदन है कि अपनी हर भूमिका को सर्वोत्तम दें व अपने स्नेह से अपने संपर्क में आने वाले हर रिश्ते को सींचें।

एक और मुद्दा जिससे मैं सहमत नहीं हूँ वह है महिलाओं के लिए आरक्षण। विशेषतौर पर जब महिलाएँ यह माँग करती हैं कि उन्हें हर क्षेत्र में आरक्षण चाहिए तो उनकी सोच पर तरस आता है। क्या यह माँग अप्रत्यक्ष रूप से यह उद्घोष नहीं करती कि वो कमज़ोर हैं, कमतर हैं और उन्हें सहारे की ज़रूरत है। अपनी शक्ति को पहचान नारी को खुद़ पर भरोसा रखना है। अपनी शक्ति को सकारात्मक दिशा दें और आने वाले सतयुग की सृजनकर्ता बनें।

निधि झावर को जन्मदिन पर सुख,शांति, सेहत, समृद्धि से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद।

नारायण के आशीर्वाद से रंजीता मालपानी विभिन्न स्त्रोतों से ५६ करोड़ रुपए कमा रही हैं ।

।।卐।।

बच्चों की फुलवारी

सतयुग का यह अंक नवरात्रि उत्सव - शुद्ध आनंद और मनोरंजन की नौ रातों को समर्पित है।

हम दो मुख्य नवरात्रि मनाते हैं, चैत्रीय नवरात्रि और शारदीय नवरात्रि। इसके अलावा गुप्त नवरात्रि भी मनाई जाती है।

वसंत या चैत्र नवरात्रि, जो चैत्र के शुक्ल पक्ष के दौरान मनाई जाती है, ज्यादातर उत्तरी भारत और पश्चिमी भारत में मनाई जाती है। यह उत्सव चंद्र-सौर कैलेंडर के अनुसार हिंदू नव वर्ष की शुरुआत का प्रतीक है और महाराष्ट्रवासी इसे गुड़ी पड़वा के रूप में मनाते हैं जबकि कश्मीरी हिंदू इसे नवरेह के रूप में मनाते हैं। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक में भी हिंदू इसे उगादी के रूप में मनाते हैं। नौ दिवसीय त्यौहार जिसे राम नवरात्रि के रूप में भी जाना जाता है, भगवान राम के जन्मदिन, राम नवमी पर समाप्त होता है।

इस बीच, अश्विन के चंद्र माह के दौरान मनाई जाने वाली शरद नवरात्रि, जिसे महा नवरात्रि भी कहा जाता है, भारत के पूर्वी हिस्से में दुर्गा पूजा के साथ-साथ उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से मनाई जाती है। यह नवरात्रि जो माँ शक्ति के नौ रूपों, दुर्गा, भद्रकाली, जगदम्बा, अन्नपूर्णा, सर्वमंगला, भैरवी, चंडिका, ललिता, भवानी और मूकाम्बिका को समर्पित है, नौ दिनों की लंबी लड़ाई के बाद देवी दुर्गा द्वारा राक्षस महिषासुर के वध का जश्न मनाती है।

शारदीय नवरात्रि से जुड़ी एक और पौराणिक कथा है। ऐसा माना जाता है कि भगवान राम ने सर्वशक्तिमान रावण के साथ युद्ध से पहले रावण को हराने के लिए देवी दुर्गा की शक्तियां हासिल करने के लिए उनके सभी नौ रूपों की पूजा की थी। यह दसवां दिन है, जिसे विजयादशमी या दशहरा के नाम से भी जाना जाता है, भगवान राम ने रावण का वध करने के बाद सीता को वापस प्राप्त किया था।

लोग इन दिव्य नौ दिनों के दौरान उपवास करते हैं लेकिन ज्यादातर लोग यह नहीं जानते हैं कि प्रत्येक दिन, देवी दुर्गा के एक अलग रूप की पूजा की जाती है। पहले दिन की शुरुआत माता शैलपुत्री की पूजा से होती है जो भगवान शिव की पत्नी हैं और वह ब्रह्मा, विष्णु और महेश की दिव्य त्रिमूर्ति के बराबर शक्ति का प्रतीक हैं। दूसरा दिन ब्राह्मचारिणी माता का है, जो भक्तों को शांति और खुशी का आशीर्वाद देती हैं। तीसरे दिन चंद्रघंटा मां को सम्मान दिया जाता है जो बहादुरी की प्रतीक हैं और राक्षसों के विरुद्ध लड़ाई लड़ने की ताकत रखती हैं। चौथे दिन माता कूष्मांडा का पूजन किया जाता है, जिन्हें ब्रह्माण्ड की निर्मात्री माना जाता है। पांचवें दिन भगवान कार्तिकेय की मां स्कंद माता को पूजा जाता है जिन्हें राक्षसों के खिलाफ युद्ध के दौरान देवताओं का नेतृत्व करने के लिए चुना गया था। छठे दिन कात्यायनी माता की पूजा की जाती है, जो साहस की प्रतीक दुर्गा का अवतार हैं, जबकि सातवां दिन कालरात्रि मां की पूजा होती है, जिनकी तीन आंखें हैं और उनकी सांसों से ज्वाला निकलती है - उनका काम अपने भक्तों को बुराई से बचाना है। नवरात्रि के आठवें दिन महागौरी माता के रूप में शांति का जश्न मनाया जाता है - ऐसा माना जाता है कि महागौरी मां अपने भक्तों को माफ कर देती हैं और उन्हें उनके पापों से मुक्त कर देती हैं। और अंतिम दिन लोग चार भुजाओं वाली देवी सिद्धिदात्री मां से आशीर्वाद मांगते हैं, जो अलौकिक उपचार शक्तियों से संपन्न हैं और अपने भक्तों को तुरंत अच्छे स्वास्थ्य का आशीर्वाद देने के लिए जानी जाती हैं।

गुजरात और आज दुनिया भर में प्रचलित नवरात्रि गरबा और डांडिया नृत्य के साथ मनाई जाती है। सभी नौ रातों

में गायक देवी की महिमा गाते हैं, उन्हें नृत्य और संगीत से प्रसन्न करते हैं और उनका आशीर्वाद मांगते हैं।

नवरात्रि हमारे लिए आत्मनिरीक्षण करने का भी समय है, और माँ दुर्गा के आशीर्वाद से हममें ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, नैतिकता, वफादारी, अच्छी वाणी जैसे मूल्यों और गुणों को पुनः स्थापित करें जो हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने में मदद करेंगे।

आइए जीवन का जश्न मनाएं।

दीदी के छाँव तले

ऑन लाइन सतसंग में दीदी ऐसे अछूते विषयों को छूती हैं जो देखने में बहुत मामूली हैं पर सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता से उनका गहरा संबंध होता है ।

ऐसा ही एक विषय है 'बिजली की चोरी'

राज दीदी के सानिध्य में रहते हुए सतसंगियों को नित नई गलतियां पता चलती हैं जिनके कारण कर्म बंधते चले आ रहे थे, परंतु अवेयरनेस की कमी के चलते कभी उन गलतियों का एहसास ही नहीं हुआ। राज दीदी के मार्गदर्शन में आने से हज़ारों सतसंगियों ने माना कि वे कई कई सालों से बिजली की चोरी करते आ रहे थे, ताकि बिजली का बिल कम भरना पड़े।

एक सतसंगी के कनफेशन के बाद अनेकों ने कबूला कि उनके परिवार में भी कई वर्षों से बिजली चोरी की जा रही है, जिसके कारण उन्हें अन्य दूसरे कार्यों में धन का व्यय हो रहा है। दीदी का कहना है कि यदि आप ईमानदारी, वफ़ादारी के रास्ते से हटते हैं तो प्रकृति के पास व्यवस्था है आपसे वसूलने की। आपको इसका भुगतान तन, मन, धन, संबंधों की अस्वस्थता के माध्यम से चुकाना पड़ता है।

प्रस्तुत हैं ऐसी कुछ आँख खोल देने वाली शेयरिंग: -

१) जब मैं शादी हो कर आई, तब मैंने ससुराल में देखा कि दिन भर एसी चलते रहते थे, परंतु कोई बिजली की बचत करने की नहीं सोचता था। फिर पता चला कि मेरे ससुर जी ने चोरी से मीटर बंद करवा दिया था जिसके कारण सिर्फ़ न्यूनतम बिल आता था । ऐसा कई सालों से चलता आ रहा था। कुछ महीनों पहले मैं सतसंग से जुड़ी, माथा टेक प्रणाम करने पर यह विचार आया कि उनके घर के सभी बेटों की आय सिर्फ़ काम चलाऊ है, जिसमें जैसे तैसे उनका खर्चा निकल पाता है। नारायण हेल्प स्थिति है। अब मैं उन्हें अवेयर कर रही हूं कि ईमानदारी के रास्ते से हटते ही प्रकृति अनेकों तरीकों से वसूल लेती है।

२) दीदी हम अपना बिजली का तार चोरी से पड़ोसी के कनेक्शन में जोड़ देते थे। ऐसा कई सालों से कर रहे हैं। आज की शेयरिंग सुन कर आभास हुआ कि जितना पैसा बिजली चोरी करके हम बचाते थे, उससे कहीं अधिक धन तो बीमारियों के इलाज़ में खर्च करना पड़ता था।

अब हमने कनेक्शन ठीक कर लिया है और आगे से ईमानदारी से ही बिल भरेंगे।

३) मेरे पति भी कई सालों से बिजली चोरी कर, एसी चलाते थे और तार पड़ोसी के जोड़ देते थे और बिल भी जमा नहीं करते थे। एक चूहा हमेशा उसी एसी के तार काट दिया करता था, कभी गद्दे काट जाता था, तो कभी

तकिए। माथा टेक प्रणाम करने के दौरान मुझे इस भूल का एहसास हुआ और मैंने तुरंत चोरी का कनेक्शन हटवा दिया। नारायण के आशीर्वाद से वह चूहा अब नहीं आता है।

४) पांच साल पहले नए कॉम्प्लेक्स में शिफ्ट किया था,तब मीटर पहले से ही लगा हुआ था।नया नहीं लगाया बिजली बिल नहीं आता था। बाद में हमें पता लगा कि हमारे फ्लैट के मीटर का तार, कॉम्प्लेक्स के कॉमन मीटर से जुड़ा हुआ है। हमने वैसा ही चलने दिया और उस व्यवस्था को ठीक करने की कोशिश भी नहीं की।

आपके सतसंग से जुड़ने से अहसास हुआ कि हमने जब नई जगह ऑफिस खोला था तब वहां पर लगे एसी का महंगा कॉपर वाला तार बार बार चोरी हो जाता था। ऐसा एक बार नहीं, बल्कि कई बार हुआ जिसके कारण हमें अनेकों बार रिपेयरिंग के लिए पैसा लगाना पड़ा।

इधर ५–६ महीनों में बिजली विभाग को भी जानकारी हो गई कि हमारे फ्लैट का तार कॉमन मीटर से जुड़ा है। उसमें हमें पेनल्टी के ६०–७० हज़ार रुपए देने पड़े। धन के साथ साथ मुझे तन से भी भुगतना पड़ रहा है। जब से हम इस फ्लैट में शिफ्ट हुए हैं, मुझे हेल्थ से संबंधित कई परेशानियां हो गई हैं। दीदी मैं नारायण भवन में क्षमा याचना करती हूं।

५) मीटर– लो लेवल पर करवा रखा था। असर तन मन धन पर हो रहा है, मायके में भी नारायण हेल्प है।

६) मीटर की रीडिंग में बेइमानी की, आज मायका, ससुराल दोनों तरफ ही नारायण हेल्प व्यवस्था है।

७) मीटर कम पर सेट कर रखा था।

दीदी हमने कई सालों से हमारे घर का मीटर बेईमानी से कम पर सेट कर रखा था। परिणाम आज तन, मन, धन, संबंधों से भुगतान कर रही हूं।

सुषमा तपड़िया और बनवारी लाल तपड़िया को विवाह वर्षगाँठ (३० नवंबर) को सुख, शांति, सेहत, समृद्धि से भरे सप्त सितारा जीवन का नारायण आशीर्वाद!

॥ 卐 ॥

प्रेरणादायक वृत्तांत

प्रथम नवरात्रि–शैलपुत्री माँ की कथा

एक बार प्रजापति दक्ष ने यज्ञ करवाने का फैसला किया। इसके लिए उन्होंने सभी देवी-देवताओं को निमंत्रण भेज दिया, लेकिन भगवान शिव को नहीं। देवी सती आश्वस्त थीं कि उनके पास निमंत्रण आएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। देवी सती उस यज्ञ में जाने के लिए बेचैन थीं, लेकिन भगवान शिव ने मना कर दिया। उन्होंने कहा कि यज्ञ में जाने के लिए उनके पास कोई भी निमंत्रण नहीं आया है और इसलिए उनका वहां जाना उचित नहीं है। सती नहीं मानीं और बार बार यज्ञ में जाने का आग्रह करती रहीं। सती के ना मानने की वजह से शिव को उनकी बात माननी पड़ी और अनुमति दे दी।

सती जब अपने पिता प्रजापति दक्ष के यहां पहुंचीं तो देखा कि कोई भी उनसे आदर और प्रेम के साथ बात नहीं कर रहा है। सारे लोग मुँह फेरे हुए हैं और सिर्फ उनकी माता ने स्नेह से उन्हें गले लगाया। उनकी बाकी बहनें उनका उपहास कर रहीं थीं और सती के पति भगवान शिव को भी तिरस्कृत कर रहीं थीं। स्वयं दक्ष ने भी अपमान करने का मौका नहीं छोड़ा। ऐसा व्यवहार देख सती दुःखी हो गईं। अपना और अपने पति का अपमान उनसे सहन न हुआ...और फिर अगले ही पल उन्होंने ऐसा कदम उठाया जिसकी कल्पना स्वयं दक्ष ने भी नहीं की होगी।

सती ने उसी यज्ञ की अग्नि में खुद को स्वाहा कर अपने प्राण त्याग दिए। भगवान शिव को जैसे ही इसके बारे में पता चला तो वे दुःखी हो गए। दुःख और गुस्से की ज्वाला में जलते हुए शिव ने उस यज्ञ को ध्वस्त कर दिया। इसी सती ने फिर हिमालय के यहां जन्म लिया और वहां जन्म लेने की वजह से इनका नाम शैलपुत्री पड़ा।

द्वितीय नवरात्रि– ब्रह्मचारिणी माँ की कथा

पूर्वजन्म में इस देवी ने हिमालय के घर पुत्री रूप में जन्म लिया था और नारदजी के उपदेश से भगवान शंकर को पति रूप में प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की थी। इस कठिन तपस्या के कारण इन्हें तपश्चारिणी अर्थात? ब्रह्मचारिणी नाम से अभिहित किया गया। एक हजार वर्ष तक इन्होंने केवल फल-फूल खाकर बिताए और सौ वर्षों तक केवल जमीन पर रहकर शाक पर निर्वाह किया।

कई दिनों तक कठिन उपवास रखे और खुले आकाश के नीचे वर्षा और धूप के घोर कष्ट सहे। तीन हजार वर्षों तक टूटे हुए बिल्व पत्र खाए और भगवान शंकर की आराधना करतीं रहीं। इसके बाद तो उन्होंने सूखे बिल्व पत्र खाना भी छोड़ दिए। कई हजार वर्षों तक निर्जल और निराहार रह कर तपस्या करती रहीं। पत्तों को खाना छोड़ देने के कारण ही इनका नाम अपर्णा पड़ गया।

अंत में पितामह ब्रह्मा जी ने आकाशवाणी के द्वारा उन्हें संबोधित करते हुए प्रसन्न स्वर में कहा- देवी! आज तक किसी ने ऐसी कठोर तपस्या नहीं की जैसी तुमने की है।तुम्हारे इस कृत्य की चारों ओर सराहना हो रही हैं।तुम्हारी मनोकामना सर्वतोभावेन परिपूर्ण होगी ।भगवान चंद्रमौलि शिवजी तुम्हे पति रूप में प्राप्त अवश्य होंगे ।अब तुम तपस्या से विरत होकर घर लौट जाओ, शीघ्र ही तुम्हारे पिता तुम्हें बुलाने आ रहे हैं। इसके बाद माता घर लौट आईं और कुछ दिनों बाद ब्रह्मा के लेख के अनुसार उनका विवाह महादेव शिव के साथ हो गया।

तृतीय नवरात्रि–चंद्रघंटा माँ की कथा

शिव और सती की शादी की तैयारियां ज़ोरों पर थीं और सभी लोग भगवान शिव और मां पार्वती के लिए खुश थे। हालाँकि, भगवान शिव विवाह में एक विशाल, लेकिन अजीब बारात लेकर पहुंचे।

भूत, ऋषि,अघोरी और तपस्वी सभी इस असामान्य विवाह बारात का हिस्सा थे। स्वयं भगवान शिव के गले में कई सर्प थे और उनके पूरे शरीर पर राख लगी हुई थी।इसके अलावा, भगवान शिव के बालों में भी सांप थे, जो उन्हें डरावना और भयावह रूप देता था। भगवान शिव के इस तरह के भयानक रूप को देखकर मां पार्वती के रिश्तेदार हैरान रह गए और लगभग हर कोई भय से बेहोश हो गया।

माँ पार्वती चिंतित हो गईं और उन्हें डर था कि इस स्थिति के कारण उनका परिवार और भगवान शिव शर्मिंदा न हों इसलिए, उन्होंने खुद को एक अवतार चंद्रघंटा में बदल लिया।

माता चंद्रघंटा को कल्याणकारी और शांतिदायक का रूप मानते हैं। माता के मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चंद्रमा चिन्हित है।यही कारण है कि मां को चंद्रघंटा कहते हैं।

यह एक भयावह नज़ारा था। माँ चंद्रघंटा का रंग सुनहरा हो गया था और अब उनकी दस भुजाएँ थीं। उन्होंने अपने भक्तों को आशीर्वाद देने के लिए अपनी दसवीं भुजा का उपयोग किया, जबकि अन्य नौ भुजाओं में एक विशिष्ट वस्तु या हथियार था। वह दो हाथों से त्रिशूल और दूसरे हाथ में कमंडल (पानी का बर्तन) लिए हुए थीं। इसके अलावा, माँ चंद्रघंटा ने एक गदा, एक धनुष और तीर, एक तलवार, एक घंटा और एक कमला (कमल) ले रखा था। माँ चंद्रघंटा ने भगवान शिव के पास जाकर उन्हें एक महान रूप लेने के लिए कहा। भगवान शिव सहमत हो गए और खुद को एक सुंदर राजकुमार में बदल लिया। साथ ही, वह अब सुंदर गहनों और आभूषणों से अलंकृत थे।

अंत में, भगवान शिव और मां पार्वती का विवाह सभी प्रार्थनाओं और अनुष्ठानों के साथ हुआ। उनका विवाह पूरी दुनिया में मनाया गया और आज भी यह महाशिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है।

चतुर्थ नवरात्रि– कूष्मांडा माँ की कथा

पौराणिक कथाओं के अनुसार जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा था, तब देवी कूष्माण्डा, जो सैकड़ों सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हैं, उस समय प्रकट हुईं और उनकी मुस्कुराहट से सृष्टि की पलकें झपकनी शुरू हो गईं। जिस तरह फूल में बीज का जन्म होता है, उसी तरह माता की हंसी से सृष्टि में ब्रह्माण्ड का जन्म हुआ, इसलिए उन्हें ब्रह्मांड की आदिस्वरूपा या आदिशक्ति कहा जाता है। देवी कूष्माण्डा का निवास सूर्य के मध्य में है और यह सूर्य के तेज और प्रकाश को नियंत्रित करती है।

पंचम नवरात्रि– स्कंदमाता की कथा

मां स्कंदमाता की गोद में भगवान स्कन्द बाल रूप में विराजित हैं। इसलिए उनका नाम स्कंदमाता है ।

तारकासुर नामक राक्षस था। जिसकी मृत्यु केवल शिव पुत्र से ही संभव थी। तब मां पार्वती ने अपने पुत्र भगवान

स्कन्द (कार्तिकेय का दूसरा नाम) को युद्ध के लिए प्रशिक्षित करने हेतु स्कन्द माता का रूप लिया और उन्होंने भगवान स्कन्द को युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया था। स्कंदमाता से युद्ध प्रशिक्षिण लेने के पश्चात् भगवान स्कन्द ने तारकासुर का वध किया।

कार्तिकेय को देवताओं का कुमार सेनापति भी कहा जाता है। कार्तिकेय को पुराणों में सनत-कुमार, स्कन्द कुमार आदि नामों से भी जाता है। मां अपने इस रूप में शेर पर सवार होकर अत्याचारी दानवों का संहार करती हैं। पर्वतराज की बेटी होने के कारण इन्हें पार्वती भी कहते हैं और भगवान शिव की पत्नी होने के कारण इनका एक नाम माहेश्वरी भी है। इनके गौर वर्ण के कारण इन्हें गौरी भी कहा जाता है। मां को अपने पुत्र से अधिक प्रेम है इसलिए इन्हें स्कंदमाता कहा जाता है जो अपने पुत्र से अत्यधिक प्रेम करती हैं। मां कमल के पुष्प पर विराजित, अभय मुद्रा में होती हैं इसलिए इन्हें पद्मासना देवी और विद्यावाहिनी दुर्गा भी कहा जाता है।

छठी नवरात्रि– कात्यायनी माँ की कथा

कत नामक एक प्रसिद्ध महर्षि थे। उनके पुत्र का नाम कात्य ऋषि था। इन्हीं कात्य ऋषि के गोत्र में अति-प्रसिद्ध महर्षि कात्यायन का जन्म हुआ।

महर्षि कात्यायन माँ पराम्बा के परम भक्त थे। महर्षि कात्यायन की प्रबल इच्छा थी कि माँ भगवती उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लें। माँ पराम्बा की उपासना करते हुए उन्होंने बहुत वर्षों तक बड़ी कठोर तपस्या की। माँ भगवती ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर महर्षि कात्यायन के घर मे जन्म लेना स्वीकार कर लिया।

आश्विन कृष्ण चतुर्दशी को ये महर्षि कात्यायन की पुत्री के रूप मे माताजी का जन्म हुआ। जन्म के उपरांत कात्यायन ऋषि ने माता आदिशक्ति की विधिवत पूजा का आयोजन किया। शुक्ल सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी तक-तीन दिन-इन्होंने कात्यायन ऋषि की पूजा ग्रहण कर के दशमी को महिषासुर का वध कर दिया था।

महिषासुर का वध करने के पश्चात समस्त देव-मानव लोकों में माँ दुर्गा की जय जयकार होने लगी। कात्यायन ऋषि की पुत्री होने के कारण यह माताजी 'कात्यायनी' के नाम से विख्यात हुईं।

सप्तम नवरात्रि–कालरात्रि माँ की कथा

पौराणिक कथा के अनुसार, रक्तबीज नामक एक दैत्य ने चारों ओर हाहाकार मचा रखा था। उसके आतंक से मानव से लेकर देवता सभी परेशान थे। रक्तबीज को ऐसा वरदान प्राप्त था कि, उसके रक्त की बूंद धरती पर गिरते ही उसी के समान एक और शक्तिशाली दैत्य तैयार हो जाएगा। इस तरह रक्तबीज की सेना तैयार होती गई और उसका आतंक भी बढ़ता गया। रक्तबीज से परेशान होकर सभी देवतागण भगवान शिव के पास पहुंचे। शिवजी जानते थे कि रक्तबीज का अंत केवल माता पार्वती ही कर सकती हैं। इसलिए उन्होंने माता पार्वती से अनुरोध किया। तब माता पार्वती ने अपनी शक्ति और तेज से मां कालरात्रि को उत्पन्न किया। मां कालरात्रि का रूप रौद्र और विकराल था। गर्दभ की सवारी, काला रंग, खुले केश, गले में मुंडमाला, एक हाथ वर मुद्रा में, एक हाथ अभय मुद्रा में, एक हाथ

में लोहे का कांटा और एक हाथ में खड्ग। मां कालरात्रि ने रक्तबीज का वध करते हुए उसके शरीर से निकलने वाले रक्त के बूंद को जमीन पर गिरने से पहले ही पी लिया और इस तरह से मां ने रक्तबीज के आतंक से मानव और देवताओं को मुक्त कराया। मां के इस रूप को कालरात्रि और कालिका भी कहा जाता है ।

अष्टम नवरात्रि– महागौरी माँ की कथा

पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए मां पार्वती ने कठिन तपस्या की थी, हजारों वर्षों तक माता ने अन्न जल ग्रहण नहीं किया था । जिससे माता का शरीर काला पड़ गया था । माता की तपस्या से प्रसन्न होकर भोलेनाथ ने उन्हें स्वीकार किया और माता के शरीर को गंगाजल से धोकर अत्यंत कांतिमय बना दिया। माता का स्वरूप गौरवर्ण हो गया । जिसके बाद माता पार्वती के इस स्वरूप को महागौरी कहा गया है । माता के इस स्वरूप की विधिवत पूजा अर्चना करने से सौंदर्य की प्राप्ति होती है तथा घर में सुख समृद्धि का वास होता है।

नवम नवरात्रि–सिद्धिदात्री माँ की कथा

पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब ब्रह्मांड पूरी तरह से अंधेरे से भरा हुआ एक विशाल शून्य था। दुनिया में कहीं भी किसी प्रकार का कोई संकेत नहीं था तब उस अंधकार से भरे हुए ब्रह्मांड में ऊर्जा का एक छोटा सा पुंज प्रकट हुआ। देखते ही देखते उस पुंज का प्रकाश चारों ओर फैलने लगा, फिर उस प्रकाश के पुंज ने आकार लेना शुरू किया और अंत मे वह एक दिव्य नारी के आकार में विस्तृत होकर रुक गया। वह प्रकाश पुंज देवी महाशक्ति के अलावा कोई और नहीं था।

सर्वोच्च शक्ति ने प्रकट होकर त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी) को अपने तेज़ से उत्पन्न किया और तीनों देवों को इस सृष्टि को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपने-अपने कर्तव्यों के निर्वाहन के लिए आत्मचिंतन करने को कहा। देवी के कथनानुसार तीनों देव आत्मचिंतन करते हुए जगत जननी से मार्गदर्शन हेतु कई युगों तक तपस्या मे लीन रहें। अंतत: उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर महाशक्ति 'माँ सिद्धिदात्री' (Siddhidatri) के रूप में प्रकट हुईं। देवी 'माँ सिद्धिदात्री' ने ब्रह्माजी को सरस्वती जी, विष्णुजी को लक्ष्मी जी और शिवजी को आदिशक्ति प्रदान कीं।

'माँ सिद्धिदात्री' ने ब्रह्माजी को सृष्टि की रचना का भार सौंपा, विष्णु जी को सृष्टि के पालन का कार्य दिया और महादेव को समय आने पर सृष्टि के संहार का भार सौंपा। 'माँ सिद्धिदात्री' ने तीनों देवों को बताया कि उनकी शक्तियाँ उनकी पत्नियों में हैं जो उनके कार्यनिर्वाहन में उनकी सहायता करेंगी। उन्होंने त्रिदेवों को दिव्य-चमत्कारी शक्तियाँ भी प्रदान की जिससे वो अपने कर्तव्यों को पूरा करने में सक्षम हो सकें। देवी ने उन्हें आठ अलौकिक शक्तियाँ प्रदान की।

इस तरह दो भागों नर एवं नारी, देव-दानव, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे तथा दुनिया की कई और प्रजातियों का जन्म हुआ। आकाश असंख्य तारों, आकाशगंगाओं और नक्षत्रों से जगमगा उठा। पृथ्वी पर महासागरों, नदियों, पर्वतों, वनस्पतियों और जीवों की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार 'माँ सिद्धिदात्री' की कृपा से सृष्टि की रचना, पालन और संहार का कार्य संचालित हुआ।

।।卐।।

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

Narayan Narayan

Navratri or Nav Durga means the festival of worshiping Shakti.

Worship of that power, gratitude to that power who created this universe and because of whose grace this universe, entire creation, entire world is stable.

We women are supposed to be a part of that supreme power. As a part of procreative power, our responsibility on this earth increases greatly.

The responsibility of taking care of everyone, imparting values to everyone, giving love, respect, and honor to everyone is on women because our children follow us. Due to this our biggest responsibility becomes that our character should be strong. Let us stand firm and strong in every situation. Tie every relationship with close threads of love and care. Give your best to everyone. Constantly practice right thoughts, speech, and behavior because we are not only the creator of our own life but the happiness, peace, health, prosperity of our entire family depends on us, therefore it is very important that we understand the importance of words and use them correctly. Use only appropriate, positive words.

Only when we do this, we will be able to give true meaning to the part of our Shakti Swarupa.

Only then we will be entitled to celebrate Nav Durga festival in true sense.

Rest all good.

R. Modi

CO-EDITOR
Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM
Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office
Narayan Bhawan
Topiwala Compound, station road,
Goregaon (West), Mumbai.

Editorial Office
Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9327784837
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI(NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	RADHIKA AGRAWAL	9326811588
GOHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGARWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGARWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MALEGAON	AARTI DI	9518995867
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGARWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGARWAL	9328199171
Sangli	Hema Mantri	9403571677
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGARWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAYPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
UBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

Editorial

Narayan Narayan

Navratri is the time of emplacement and worship of Shakti. The Shakti(power) that is running this entire universe. The power that holds this entire universe. The power which has given birth to every particle of the universe. The progress, growth and success of every particle is also due to this power.

To show gratitude towards this Shakti, the scriptures have prescribed Navratri festival in the form of Shakti Puja every year which is prevalent since time immemorial, and we Hindus celebrate this festival with great devotion and emotion.

Team Satyug is keen to unravel the significance and understand the true meaning of Shakti in this issue.

We want our readers to read, understand and implement it in life.

All good,

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from
NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

|| Narayan Narayan ||

॥ 卐 ॥

Call of Satyug

The festival of Navratri is a festival of celebration of the Aadya Shakti who created this entire universe which made evolution possible. The power which holds this entire universe is recognized as a procreator, a mother, and a woman.

Navratri festival is truly a celebration of womanhood.

These nine days are dedicated to complete worship of Durga and her eight incarnations. The form of exaltation of femininity is completely reflected through the nine incarnations of Mother, which are as follows.

Shailputri is the creator of Trinity power and creation.

Maa Brahmacharini is a symbol of spirituality, meditation, peace, prosperity, and happiness. The mother of the house fills the home with spirituality through worship. The only aim of worshiping is for the happiness, peace, health, and success of her family. Every breath of the women is for her family.

Mother Chandra ghanta is the reflection of the destroyer of unrighteousness and the ruler of righteousness.

Mother Kush Manda is the originator and sustainer of creation.

Mother Skanda Mata is synonymous with knowledge, power, fire, energy, life, and prosperity.

Katyayani is the warrior goddess Mahishasuramardini.

Kaalratri is the violent form of Goddess Durga, the destroyer of evil.

Mahagauri represents purity, energy, and brilliance.

Siddhidatri is omnipresent, knowledge.

We have been given 9 special days in a year to worship mother power. It is a celebration of respect and honor of women power. This festival reminds women of their self-respect and their power and inspires other leaders of the society to respect women power. Being a mother reflects the greatest quality of a woman. The greatest quality of power that God has given her is motherhood. A mother sacrifices her entire life for the upbringing and survival of her child. It is through motherhood that she sows the seeds of values in her children. This feeling transpired through motherhood instills in a person qualities like kindness, compassion, love etc.

The strength of will and determination that a woman possesses is rarely found in a man. Today, due to their strong will power, women are establishing themselves at home and outside, be it office or social work field.

Playing a double role, she handles both the situations well. A girl's ego disappears after marriage. She is known by her husband's name. Her aim is to pay attention to her husband's work and her husband's family, to give due respect to her husband's family, to keep her emotions aside and to work with sacrifice and dedication. A woman's life is a penance, a penance for the family, which is done selflessly.

In every house there is a woman who provides coolness to those who are burning in the struggle and fire. She keeps motivating the family members to work with her knowledge, struggle, and deeds. Be it a wedding occasion or someone in trouble at home – a man cannot understand that time with as much emotion as a woman does.

The house becomes pure with the aura of a woman. When you come tired from outside, your daughter, wife or mother stands in front of you with a glass of water and asks you - 'Are you very tired today?' All fatigue vanishes with this one loving statement. The entire family gets charged by the energy of women. The energy a brother gets from the love of a sister, energy a husband gets from a wife and last but not least a son resolves to live his life by getting energy from the demeanor of his mother. Because of this, brightness spreads throughout the boundary walls of the house. A house where there is no woman appears to be dull.

Only women do the work of keeping everything in the house organized, be it related to food items, be it rangoli decorated in the courtyard or maintenance of artistic objects on the walls of the house. Also, from the cleanliness of the house and courtyard, purity and sweetness of speech are the qualities of a woman, which makes the atmosphere of the entire house sweet, especially with the daughters, the dignity, sweetness, and love of the house increases.

At home, the more the daughters understand the feelings of their parents, the more they cooperate in their father's work. On the other hand, sons rarely match it. Even when daughters go to their husband's house after marriage, they are more

worried about their parents. By providing affection and love in the form of a daughter, they awaken the feeling of compassion in the hearts of parents.

Indian women used to be sages in ancient times. There are many women whose knowledge and penance influenced all three worlds. The sages' wives also remained engrossed in penance along with the sages. That was Satyug, after that in Kaliyuga also, women showed their bravery to protect the culture.

Many brave women were born on the soil of this country. The family and society have received energy from time to time due to their inspiration and resolutions. Even today, the invocation is being done by women power at all levels, be it spiritual, social, or political. Women in high positions are giving direction to the country by their wisdom.

If we observe the power and qualities of Navadurga, we will find that in Sanatan culture, woman is not only a part of nature but is also the only source of power. Navratri is the worship of this source of female power. The power from which creation began. The power that is responsible for the maintenance and end of creation. The power which not only provides a basis to existence by establishing balance but also paves the way for the life of mankind through its different incarnations. It is not found in any religion or mythology that women have reached the level of God. Hindu religion has held the female power above God and has described it as the center of all virtues, actions, knowledge, balance, spirituality, religion and courage. Whatever is good is procreated or created by women- This festival is based on this concept.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Ayodhya ji Malpani for good health and a seven star life

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Nidhi Jhavar on her birthday (2nd October) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

This time in this column of wisdom box, we bring to you Didi's thoughts by means of her favorite characters Radhika and Kalyani.

Radhika writes that one day, I was sitting in meditation. I felt as if my Guru had told me "Radhika, speak what you want", and work on it and then you will see that this nature, this universe, this entire universe has come to help you, your dreams." Radhika further writes that suddenly I remembered that some time ago I had done a course under my Guru and in that course, our Guru had explained a very deep secret to us in very simple language. He asked us to imagine a picture-

This is your mind, which is divided into eight parts. One top layer is our awaken mind, i.e. our conscious mind and the remaining seven parts, it is our subconscious mind.

Our subconscious mind is much more powerful than our conscious mind.

Our Guru told us that when the belief system of the subconscious mind is strong then whatever we want to achieve in our life becomes very easy to achieve. Radhika further says that our guru told.

Whatever we promise, whatever we commit, we must fulfill it.

For example: You thought that from tomorrow I will wake up every morning at 5:00. You must wake up at 5:00 every day and wake up regularly. Gradually this subconscious mind will start believing in your words and it will become stronger and then gradually as you start making promises to it, whether small or big, you will start fulfilling the promises. It will become very easy for you to achieve whatever you want in life.

Radhika writes that I thought of trying this technique, thought of assimilating it because I wanted to get out of disparity. I had lost my confidence, I wanted to bring it back. In the beginning, I started doing small experiments. I decided that from tomorrow I will wake up at 4:00 am and I started getting up. I will meditate for half an hour, do exercise for an hour, read good books for an hour and I ultimately started all this.

Gradually I felt that I was gaining strength. When I started feeling that I was becoming stronger from within, I started accepting bigger challenges and I started feeling victorious from within. The big challenge which existed two and a half years ago, now seems small to me. I started working on it and I saw that that we came

closer in relationship and today the state is that our mutual relationship has become very strong and is getting stronger day by day.

Radhika further writes- I kept making promises, kept fulfilling them and became stronger from within. I was getting big awards for my work. I was healing such people about whom it was said that it was impossible for them to get healthy. Every day I was reaching new heights, which I had never even imagined.

Radhika writes further, but there was still a fear within me, which was there since childhood that I was very afraid of driving a car. As I grew up, I learned to drive a car. Being a physiotherapist, I come across many accident cases, and I get very scared. But still I wanted to drive a car. One day during meditation my Guru made me realize that "Radhika! repeat what you want", work on it and then see this whole universe has come to help you, to fulfill your dreams. I gathered courage and started driving the car. Today I have my own BMW which I drive myself.

Radhika further writes that sometimes I am surprised because I accepted one thing from the Guru, worked on it and reached where I am. Now I have decided that I will have to think carefully about the promises I make, I must make only those commitments that I can fulfill because this will give me strength. I have decided, what do you think about it?

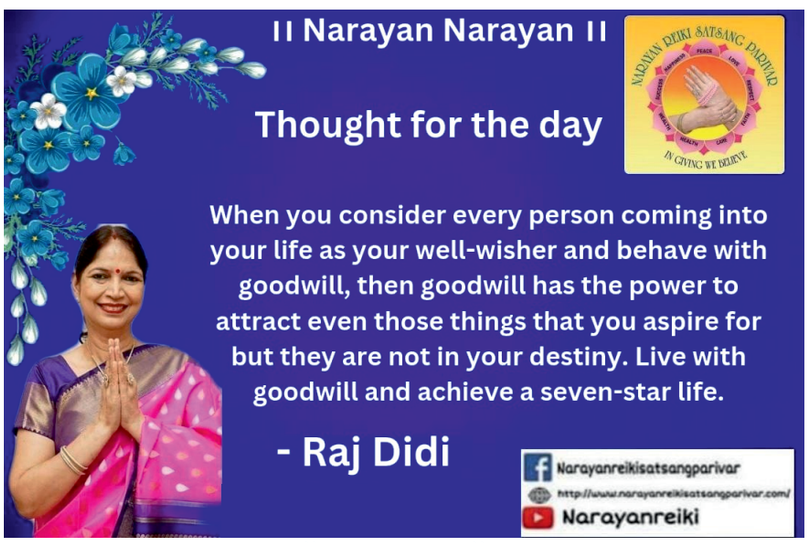

Youth Desk

Navratri is a period dedicated to women power. Human creation is possible only through woman. Woman is the nurturer. Various forms of women are worshipped during these nine days. The main purpose is to make women aware of their latent powers. It is necessary for our younger generation to understand that women need to be looked upon with respect.

Every woman needs to imbibe those qualities within herself by which she stands firmly in the category of the revered ones.

Every man should give importance to the invaluable contribution a woman makes, give reverence to her i.e. give her respect.

Our youth, which includes both men and women, will have to understand this equation. The females need to make efforts so that they acquire Goddess like qualities and men acknowledge their contribution.

A woman will have to play the role of an ideal daughter, sister, daughter-in-law, mother, and mother-in-law in the best possible manner and walk hand in hand with the society and at the workplace. In today's environment, women are leaving their mark in every field and at every level. Women are fulfilling their responsibilities both at home and at workplace in best manner. By making good use of the power inherent in women, today they have become venerable, but at the same time, women should also understand that in today's era, they should not take advantage of the special rights they have been given. They should be conscious of their duties and create a healthy society.

Nowadays, it is often seen that women take advantage of the law and make false allegations against their in-laws, sometimes they deviate from their responsibilities and behave rudely. All of you girls are once again requested to give your best to every role you have been assigned and nourish every relationship you come in contact with your love.

Another issue with which I do not agree is reservation for women. It is pitiful when women demand that they want reservation in every field. Doesn't this demand indirectly declare that they are weak, inferior and in need of support?

Women must recognize their power and have confidence in themselves. Give positive direction to your power and become the creator of the approaching Satyug.

॥ 卐 ॥

Children's Desk

This issue of Satyug is dedicated to Navratri festival - nine nights of pure joy and entertainment.

We celebrate two Main Navratri's the Chhatriya Navratri and the Shradhiya Navratri. Apart from this Gupt Navratri is also celebrated.

Vasanta or Chaitra Navaratri, which is observed during the Shukla Paksha of Chaitra, is mostly observed in northern India and western India. The celebration marks the start of the Hindu New Year as per the Luni-solar calendar and Maharashtrians celebrate is as Gudi Padwa while Kashmiri Hindus observe it as Navreh. Even in Andhra Pradesh, Telangana and Karnataka, Hindus celebrate it as Ugadi. The nine-day festival which is also known as Rama Navratri ends on Rama Navami, Lord Ram's birthday.

Meanwhile, Sharad Navaratri, also called Maha Navaratri, celebrated during the lunar month of Ashvin is widely celebrated in eastern part of India as Durga Puja and, northern and western regions. This Navratri which is dedicated to nine forms of Maa Shakti namely, Durga, Bhadrakali, Jagadamba, Annapurna, Sarvamangala, Bhairavi, Chandika, Lalita, Bhavani and Mookambika, celebrates the slaying of demon Mahishasura by Goddess Durga, after a long battle of nine days.

There's another legend associated with Sharadiy Navratri. It is believed that Lord Ram ahead of the battle with the all-powerful Ravana worshipped all the nine forms of Goddess Durga to gain her powers in order to defeat Ravana. It is on the tenth day, which is also known as Vijaya Dashami or Dusshera, Lord Ram won back Sita after slaying Ravana.

People fast during these divine nine-days but what most don't know is that on each day, a different form of Goddess Durga is worshipped. Day one starts with worshipping Mata Shailputri who is the consort of Lord Shiva and is the one who embodies the power equal of the divine trinity of Brahma, Vishnu, and Mahesh. Day two is about Brahmacharini Mata, the goddess who observes austerity and blesses the devotees with peace and happiness. Day three pays respect to Chandra ghanta Maa who is the apostle of bravery and possesses strength to fight the battle against demons. Day four observes Mata Kush Manda, who is considered the creator of the universe. Day five pays tribute to Skanda Mata, the mother of Lord Kartikeya who was the chosen one to lead the gods during the war against the demons. Day

six worships Katyayni Mata, an avatar of Durga who embodies courage, while day seven is about Kalratri Maa who has three eyes and flame emanating from her breath – her job is to protect her devotees from evil. Navratri also celebrates calmness and peacefulness in the form of Maha Gauri Mata on the eighth day – she is believed to forgive her devotees and cleanse them of their sins. And on the last day people seek blessings from Siddhidatri Maa, the goddess with four arms who is endowed with supernatural healing powers and is touted to bless her devotees immediately with good health.

In Gujarat and today around the World Shradhiy Navratri is celebrated with garbha and dandia a form of dance. All the nine nights singers sing the glory of the goddess, appeasing her with dance snd music and seeking her blessings.

Navratri is also a time for us to introspect, and with the blessings of Ma Durga reinstate in us the values and virtues of honesty, integrity, morality, loyalty, good speech which will help us in making our life Meaningful.

Let's celebrate Life!

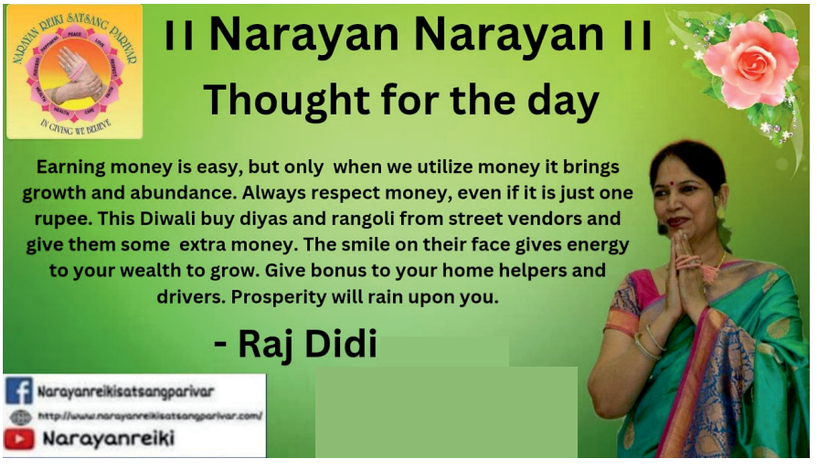

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Ranjita Malpani Earning Jackpot amount in multiples of Rs.56 crore from multiple sources of income

॥ 卐 ॥

Under The Guidance of Rajdidi

In the online Satsang, Didi reflects on such untouched topics which are very minor in appearance but have a deep connection with happiness, peace, health, prosperity, progress, growth and success.

One such topic is electricity theft.

In the Online Narayan Bhawan, in the company of Raj Didi, Satsangis come to know about new mistakes every day due to which karmas are made due to lack of awareness. People never realized those mistakes until such confessions came up. Under the guidance of Raj Didi, thousands of Satsangis admitted that they had been stealing electricity for many years so that they had to pay less electricity bills.

After the confession of a satsangi, many people confessed that electricity has been stolen from their family for many years, due to which they must spend money on other works. Didi says that if you deviate from the path of honesty and loyalty, then nature has a system to extract from you. You pay for it through unhealthy body, mind, money, relationships.

Here we present some such eye-opening sharings: -

1) When I got married, I saw in my in-laws' house that the ACs were running all day long, but no one thought of saving electricity. Then I came to know that my father-in-law had secretly switched off the meter due to which only the minimum bill came. This had been going on for many years. A few months ago, I joined the Satsang and during prostrations I realized that the income of all the sons in their family could hardly sustain living, they could somehow manage to meet their expenses. Now I am making them aware that as soon as one deviates from the path of honesty, nature retorts in many ways.

2) Sister, we used to secretly connect our electric wire to the neighbor's connection. Have been doing this for many years. After listening to today's sharing, I realized that we had to spend more money in the treatment of diseases than the money we saved by stealing electricity.

Now we have fixed the connection and will pay the bills honestly from now on.

3) My husband also used to steal electricity for many years, run AC and connect the neighbor's wires and did not even pay the bills. A rat always used to cut the wires of the same AC, sometimes it would cut the mattresses and sometimes the

pillows. While bowing my head, I realized this mistake and immediately got the stolen connection removed. With the blessings of Narayan, that rat no longer comes.

4) Had shifted to a new complex five years ago, at that time the meter was already installed. A new one was not installed and there was no electricity bill. Later we came to know that the meter wire of our flat was connected to the common meter of the complex. We allowed it to continue as it was and did not even try to fix the system.

After joining your Satsang, I realized that when we opened an office at a new place, the expensive copper wire of the AC installed there used to be stolen again and again. This happened not once but several times due to which we had to spend money on repairs.

Here, within 5-6 months, the electricity department also came to know that the wire of our flat is connected to the common meter. In that we had to pay Rs 60-70 thousand as penalty. Along with money, I am also suffering physically. Ever since we moved to this flat, I have had many health-related problems. Sister, I apologize in Narayan Bhawan.

5) Meter – It was kept at low reading. It was affecting the body, mind and wealth, Narayan help in the parents' house also.

6) Dishonesty in meter reading, today there is Narayan Help system at both parents' and in-laws' houses.

7) The meter was set to low.

Sister, we dishonestly kept the meter of our house set at a low rate for many years. Today I am paying the result with body, mind, money and relationships.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Sushma Taparia and Banwarilal Taparia on their Anniversary (30th November) for a seven-star life and years of togetherness.

First Navratri - Maa Shailputri

Once Prajapati Daksh decided to perform a yagna. For this he sent invitations to all the gods and goddesses, but not to Lord Shiva. Goddess Sati was sure that an invitation would come to her, but that did not happen. She was desperate to go to that yagna, but Lord Shiva refused. He said that he has not received any invitation to go to the Yagya and hence it is not appropriate to go there. Sati did not agree and kept insisting again and again to go to the yagua. Due to Sati's insistence, Shiva had to listen to her and gave her permission.

When Sati reached her father Prajapit Daksh's house, she saw that no one was talking to her with respect and love. Everyone turned their faces away and only her mother hugged her affectionately. Her other sisters were ridiculing her and ridiculed Sati's husband Lord Shiva. Daksh himself also did not miss the opportunity to insult him. Sati became sad seeing such behavior. She could not bear the insult to herself and her husband... and the next moment she took a step which even Daksh himself would not have imagined.

Sati sacrificed her life by immolating herself in the fire of the yagna. As soon as Lord Shiva came to know about this, he became very sad. Burning in the flame of sorrow and anger, Shiva destroyed that yagna. Sati again took birth in the Himalayas and because of being born there, she was named Shailputri.

Second Navratri - Maa Brahmacharini

In her previous birth, this goddess was born in the form of a daughter in the house of Himalaya and on the advice of Narad, she performed severe penance to get Lord Shankar as her husband. Due to this difficult penance, she was named Tapashcharini i.e. Brahmacharini. She spent a thousand years eating only fruits and flowers and for a hundred years she lived only on the land and survived on vegetables.

Observed a strict fast for a few days and endured severe hardships under the open sky in the form of rain and sun. For three thousand years she ate broken Bilva leaves and continued worshiping Lord Shankar. After this she even stopped eating dried Bilva leaves. She continued to do penance by remaining waterless and fasting for several thousand years. Because she stopped eating leaves, she was named Aparna.

At last, Grandfather Brahma Ji addressed her through Akash Vani and said in a happy voice – Devi! Till date, no one has done such harsh penance as you have done. This act of yours is appreciated by everyone all around. Your wish will be fulfilled in every way. You will get Lord Chandramauli Shivji as your husband. Now you should stop your penance and return home. Go, your father is coming to call you soon. After this, mother returned home and after a few days, according to Brahma's writings, she got married to Mahadev Shiva.

Third Navratri - Maa Chandraghanta

Preparations for the marriage of Shiva and Sati were in full swing and everyone was happy for Lord Shiva and Mother Parvati. However, Lord Shiva arrived at the wedding with a huge, but strange wedding procession.

Ghosts, sages, aghoris and ascetics were all part of this unusual wedding procession. Lord Shiva himself had many snakes around his neck and his entire body was covered with ashes. Apart from this, Lord Shiva also had snakes in his hair, which gave him a scary and horrifying look. Seeing such a terrible form of Lord Shiva, the relatives of Mother Parvati were shocked and almost everyone became unconscious with fear.

Mother Parvati became worried and feared that her family and Lord Shiva might be embarrassed due to this situation hence, she transformed herself into an incarnation Chandra ghanta.

Mother Chandra ghanta is considered as a form of welfare and peace. There is an hourglass shaped half-moon marked on the mother's forehead. This is why the mother is called Chandra ghanta.

It was a horrifying sight. Mother Chandra Ghanta's complexion had become golden and now she had ten arms. She used his tenth arm to bless her devotees, while the other nine arms held a specific object or weapon. She was holding a trident with two hands and a kamandal (water pot) in the other hand. Besides this, Maa Chandra ghanta carried a mace, a bow and arrow, a sword, a gong, and a lotus.

Mother Chandra ghanta went to Lord Shiva and asked him to take a great form. Lord Shiva agreed and transformed himself into a handsome prince. Also, he was now adorned with beautiful jewels and jewelry. Finally, the marriage of Lord Shiva and Mother Parvati took place with all the prayers and rituals. Their marriage was celebrated all over the world and is celebrated even today as **Mahashivratri**.

Fourth Navratri- Maa Kushmanda

According to mythology, when the universe did not exist, there was darkness all around, then Goddess Kushmanda, who is illuminated by the light of hundreds of suns, appeared and with her smile the eyelids of the universe started blinking. Just as a seed is born in a flower, in the same way the universe was born from the laughter of the mother, hence she is called the original form or Adishakti of the universe. Goddess Kushmanda resides in the center of the Sun and controls the brightness and light of the Sun.

Fifty Navratri - Maa Skandamata

Lord Skanda is seated in child form in the lap of Mother Skanda Mata. That's why her name is Skandmata. There was a demon named Tarak Asur. Whose death was possible only

by Shiva's son. Then Mother Parvati took the form of Skanda Mata to train her son Lord Skanda (another name of Kartikeya) for war and she trained Lord Skanda for war. After taking combat training from Skanda Mata, Lord Skanda killed Tarak Asura.

Kartikeya is also called the Kumar Commander of the Gods. Kartikeya is also known by the names Sanat-Kumar, Skanda Kumar etc. in the Puranas. In this form, the mother rides on a lion and kills the tyrannical demons. Being the daughter of Parvatraj, she is also called Parvati and being the wife of Lord Shiva, her name is Maheshwari. Because of their fair complexion they are also called Gauri. Mother loves her son more; hence she is called Skandmata who loves her son very much. Mother is seated on a lotus flower and is in the Abhaya Mudra, hence she is also called Padmasana Devi and Vidyavahini Durga.

Sixth Navratri - Maa Katyayani

There was a famous Maharishi named Kat. His son's name was Katya Rishi. The very famous Maharishi Katyayan was born in the clan of this Katya Rishi.

Maharishi Katyayan was a great devotee of Mother Paramba. Maharishi Katyayan had a strong desire that Mother Bhagwati be born as a daughter in his house. While worshiping Mother Paramba, he performed severe penance for many years. Mother Bhagwati was pleased with his penance and accepted birth in the house of Maharishi Katyayan.

Mataji was born as the daughter of Maharishi Katyayan on Ashwin Krishna Chaturdashi. After birth, sage Katyayan organized the ritual worship of Mother Adishakti. Shukla Saptami, Ashtami, and Navami - for three days - he worshiped sage Katyayan and killed Mahishasura on Dashami. After killing Mahishasura, people started praising Mother Durga in all the gods and human worlds. Being the daughter of sage Katyayan, this mother became famous by the name of 'Katyayani'.

Seventh Navratri - Maa Kalratri

According to the legend, a demon named Raktabeej had created havoc all around. Everyone from humans to gods were troubled by his terror. Raktabeej had received such a boon that as soon as a drop of his blood fell on the earth, another powerful monster like him would be created. In this way Raktabeej army got ready and so did his terror. It continued to grow. Troubled by the Raktabeej, all the gods reached Lord Shiva. Shiv ji knew that only Mother Parvati could end the Raktabeej. Therefore, he requested Mother Parvati. Then Mother Parvati, with her power and brilliance created Maa Kalratri. The form of Mother Kalratri was fierce and monstrous. Riding on donkey, black complexion, open hair, garland around the neck, one hand in blessing (Varaha) posture, one hand in protecting (Abhaya) posture, one hand in thunderbolt and one hand in scimitar. Mother Kalratri, while killing

Raktabeej, came out of his body. She drank every drop of blood before it fell on the ground and thus the mother freed humans and gods from the terror of Raktabeej. This form of Mother is also called Kalratri and Kalika.

Eighth Navratri - Maa Mahagauri

According to mythology, Mother Parvati had done hard penance to get Lord Shiva as her husband, Mother had not consumed food and water for thousands of years. Due to which mother's body had turned black. Pleased with the penance of the mother, Bholenath accepted her and washed her body with Ganga water and made it extremely radiant. Mother's form became glorious. After which this form of Mother Parvati was called Mahagauri. By worshiping this form of Mother Goddess properly one attains beauty and happiness, and prosperity resides in the house.

Ninth Navratri - Maa Siddhidatri

According to mythology, the universe was a vast void filled with complete darkness. There was no signal of any kind anywhere in the world, then a small beam of energy appeared in that dark universe. Within no time the light of that beam started spreading all around, then that beam of light started taking shape and finally it expanded and stopped in the shape of a divine woman. That beam of light was none other than Goddess Maha shakti. The supreme power appeared and created the Trinity (Brahma, Vishnu and Shivji) from its power and asked all three gods to introspect to perform their respective duties to run this universe smoothly.

According to the words of the Goddess, the three gods remained engaged in penance for many ages while introspecting and seeking guidance from the mother of the World. Ultimately, pleased with his penance, the superpower appeared in the form of 'Mother Siddhidatri'. Goddess 'Maa Siddhidatri' provided Saraswati to Brahma, Lakshmi to Vishnu and Adishakti to Shiva. 'Maa Siddhidatri' entrusted the responsibility of creation of the universe to Brahmaji, gave the responsibility of maintenance of the universe to Vishnuji and entrusted the responsibility of destruction of the universe to Mahadev when the time came. 'Maa Siddhidatri' told the three gods that their powers were in their wives who would help them in carrying out their tasks. He also bestowed divine-miraculous powers on the Trinity to enable them to perform their duties. The goddess bestowed him with eight supernatural powers.

In this way, two parts, male and female, gods and demons, animals and birds, trees and plants and many other species of the world were born. The sky sparkled with innumerable stars, galaxies, and constellations. Oceans, rivers, mountains, flora, and fauna originated on Earth. In this way, by the grace of 'Maa Siddhidatri' the work of creation, maintenance and destruction of the universe was carried out.

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com